पंचदेव उपासना में प्रमुख श्रीगणपति जी

शास्त्रीय प्रमाणों से पंचदेवों की उपासना सम्पूर्ण कर्मों में प्रख्यात है। 'शब्दकल्पद्रुम' कोश में लिखा है-

आदित्यं गणनाथं च देवीं रूद्रं च केशवम्।
पंचदैवतमित्युक्तं सर्वकर्मसु पूजयेत्।।

पंचदेवों की उपासना का रहस्य पंचभूतों के साथ सम्बन्धित है। पंचभूतों में पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश प्रख्यात है और इन्हीं के आधिपत्य के कारण से आदित्य, गणनाथ(गणेश), देवी, रूद्र और केशव-ये पंचदेव भी पूजनीय प्रख्यात हैं। एक-एक तत्व का एक-एक देवता स्वामी है-

आकाशस्याधिपों विष्णुरग्नेश्चेव महैश्वरी।
वायोः सूर्यः क्षितेरीशो जीवनस्य गणाधिपः ।।

क्रम निम्न प्रकार है-

	महाभूत	अधिपति
1.	क्षिति (पृथ्वी)	शिव
2.	अप् (जल)	गणेश
3.	तेज (अग्नि)	शक्ति (महेश्वरी)
4.	मरूत् (वायु)	सूर्य (अग्नि)
5.	व्योम (आकाश)	विष्णु

यह विषय गम्भीरता से मननीय तथा गवेषणीय है। इस विषय में अल्प ही संकेत दिये जा सकते हैं। भगवान श्रीशिव के पृथ्वीतत्व के अधिपति होने के कारण उनकी पार्थिव-पूजा का विधान है। भगवान विष्णु के आकाशतत्व के अधिपति होने के कारण उनकी शब्दों द्वारा स्तुति का विधान है। भगवती देवी के अग्नि-तत्व का अधिपति होने के कारण उनका अग्निकुण्ड में हवनादि के द्वारा पूजा का विधान है। श्रीगणेशजी के जलतत्व के अधिपति होने के कारण उनकी सर्वप्रथम पूजा का विधान है। मनु का कथन है- 'अप एवं ससर्जादौ तासु बीजमवासृजत्।' इस प्रमाण से सृष्टि के आदि में एकमात्र वर्तमान जल के अधिपति गणेश है।। अतः जितने भी अनुष्ठान किये जायें, उनके आरम्भ में गणेश पूजन आवश्यक है। सूर्य के वायुतत्व के अधिपति होने के कारण प्राण की रक्षा के लिये 'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्चच' (यजुर्वेद 8।42) इस प्रमाण से नमस्कारादि द्वारा पूजन का विधान है।

'मन्त्रयोगसंहिता' में कहा गया है-

मानवानं प्रकृतयः पंञ्चधा परिकीर्तिताः।
यतो निरूप्यते सर्गः पञ्चभूतात्मकैर्बुधैः।।
भिन्ना यद्यपि भूतानां प्रकृतिः प्रकृतेर्वशात्।
तथापि पञ्चतत्वानामनुसारेण तत्ववित्।।
प्रत्येकतत्वप्राचुर्य विमृश्य विधिपूर्वकम्।
उपासनाधिकारस्य पञ्चभेदमवर्णकयत्।।

तात्पर्य यह है कि समस्त जगत् पञ्चभूतात्मक है। इसलिये तत्सम्बन्धी पञ्चदेवों की उपासना अनिवार्य है। प्रत्येक पूजा में पञ्चदेवोपासना का विधान है- 'गणेशदिपञ्चदेवताभ्यो नमः' (नारदपुराण 3।65)। उनमें भी सर्वप्रथम गणेश की पूजा अनिवार्य है। इन गणेश की पूजा के लिये अनेक प्रमाण हैं-

'गणानां त्वा' इत्यादि(शुक्लयजुर्वेदसंहिता 23।19)

'गणपत्यथर्वशीर्ष-उपनिषद्' (6) में इनको सर्वदेवमय माना गया है और

इनकी पूजा से सब देवताओं की पूजा होती है, ऐसा लिखा है-

'त्वं ब्रह्मा त्वं विष्णुस्त्वं रूद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्वं वायुस्त्वं सूर्यस्त्वं चन्द्रमास्त्वं ब्रह्म भूर्भूवः स्वरोम्।।'

इसी प्रकार 'गणपत्यथर्वशीर्ष-उपनिषद्' में लिखा है कि 'जो गणेश की पूजा करता है, वह सम्पूर्ण दोषों से, सम्पूर्ण विघ्नों से, सम्पूर्ण पापों से छूट जाता है और वही सर्वविद् है-

'गणादिं पूर्वमुच्चार्य वर्णादिं तदनन्तरम्। अनुस्वारः परतरः, अर्धेन्दुलसितम्, तारेण रूद्धम्। एतत्तव मनुस्वरूपम्। गकारः पूर्वरूपम्। अकारो मध्यमरूपम्। अनुस्वारश्चारत्यं रूपम। विन्दुरूत्तररूपम्। नादः संधानम्, संहिता संधिः। सैषा गणेशविद्या। ॐ गं (गणपतये नमः)।'

श्रीगणेश की अनेक उपनिषदों में भिन्न-भिन्न गायत्रियां भी प्राप्त होती हैं-

1-एकदन्ताय विद्यहे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। (नारायणोपनिषद्)

2-तत्पुरूषाय विद्यहे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। (नारायणोपनिषद् 10।1)

3-तत्कराटाय पिद्यहे हस्तिमुखाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।। (मैत्रायणीसंहिता 2।1।6)

पञ्चदेवोपासना वेदविहित है। इस विषय में अनेक वैदिक प्रमाण उपलब्ध हैं। पञ्चदेवोपासना में गणेश का स्थान सर्वप्रथम है, क्योंकि वे प्रथम उत्पन्न होने वाले (जल)-तत्व के अधिपति हैं, इसलिये सर्वप्रथमतत्व के अधिपति की पूजा सर्वप्रथम होनी ही चाहिये। गणेशगीता 1।21 में लिखा है कि 'शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य और मुझ गणेश में अभेदबुद्धि रखनेवाला ही योगी होता है'- शिवे विष्णौ च शक्तौ च सूर्ये मयि नराधिप।

योऽभेदबुद्धिर्योगः स सम्यग्योगो मतो मम।।

इसलिये सभी देवताओं में गणेशजी की पूजा का सर्वप्रथम स्थान युक्तिसंगत है।

कल्याणी रक्षा कवच

प्राचीन काल में मारण, विद्वेषण, षटकर्म प्रयोग आदि तांत्रिककर्म एवं मंत्र गुप्त रखे जाते थे, गुरु योग्य शिष्यों को ही इनका ज्ञान देते थे, लेकिन आज नौसिखिये व्यक्ति इन का दुरुपयोग करने लगे हैं, ये कवच जहाँ एक ओर आप पर किये गये तांत्रिक प्रयोगों से रक्षा करेगा वही भविष्य में होने वाले किसी भी प्रकार की तंत्र बाधा से आपकी रक्षा करेगा! अपनी और अपनों की सुरक्षा आपके हाथ.....

न्यौछावर राशि 4000/- रु.

पारद है जहाँ लक्ष्मी है वहाँ

'पारद' शब्द में पत्र विष्णु, अत्र (अकार) कालिका, रत्रशिव और दत्र ब्रह्मा के प्रतीक है।

रसराज रससिद्ध पारद सभी धातुओं में सर्वश्रेष्ठ माना गया है। भगवान शंकर के शक्ति रूप होने के कारण सभी देवी-देवताओं के द्वारा वंदनीय है। यह अनेक चैतन्य मंत्रात्मक क्रियाओं से संस्कारित होकर जिस किसी भी घर में भगवान शिव का प्रतीक शिवलिंग, पारद श्रीयंत्र, पारद कुबेरयंत्र, पारद लक्ष्मी प्रतिमा, गणेश प्रतिमा, पारद पिरामिड, पारद माला, पारद गुटिका या अन्य किसी भी पारद प्रतिमा के रूप में स्थापित होता है वह घर, वह परिवार, सर्वत्र मंगलमय सुखद एवं शांति का अनुभव करता है। सत्य तो यह है कि पारद पूर्ण संसार का एक आधारभूत तत्व है इसलिये धर्म, अर्थ और काम, मोक्ष, धन, आरोग्य, ज्ञान और ऐश्वर्य प्राप्ति का मूलभूत साधन भी है। जिस घर में यह प्रतिमा स्थापित हो, पूजन हो तो समस्त वातावरण इसके कारण धन-धान्य से पूर्ण होकर अध्यात्ममय बन जाता है।

जो पारद लिंग का पूजन करता है उसे तीनों लोकों में स्थित शिवलिंगों के पूजन का फल मिलता है। इसके दर्शन से 100 अश्वमेघ यज्ञ करने, करोड़ों गौ दान करने एवं सहस्त्र मण स्वर्ण दान करने का फल मिलता है। पारे से अधिक गुण वाला पदार्थ न हुआ है और न होगा।

1. पारद शिवलिंग 1100 रू. से आरम्भ 2. पारद प्रतिमाएं 1100 रू. आरम्भ 3. पारद माला 1500 रू. से आरम्भ 4. पारद श्रीयंत्र 1100 रू. से आरम्भ 5. श्री सुमेरूपृष्ठ पारद निर्मित कुबेरयंत्र 2100रू. से आरम्भ 6. पारद पिरामिड 550रू. 7. ऑफिस, दुकान, आदि के वास्तुदोष निवारण के लिए विशिष्ट नौ सुमेरू युक्त पारद पिरामिड 2100 रू. 8. पारद पिरामिड लॉकेट 550 रू. (पारद प्रतिमाएं व अन्य सामग्री की न्यौंछावर आकार व वजन के अनुसार)

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291-2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org